

भगत रविदास – सबद ३४
सुख सागर सुरितरु चिंतामनि कामधेन बसि जा के रे ॥
रागु मारू, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ११०६

सुख सागर सुरितरु चिंतामनि कामधेन बसि जा के रे ॥
चारि पदारथ असट महा सिधि नव निधि कर तल ता कै ॥ १ ॥
हरि हरि हरि न जपसि रसना ॥
अवर सभ छाडि बचन रचना ॥ १ ॥ रहाउ ॥
नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर माही ॥
बिआस बीचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥ २ ॥
सहज समाधि उपाधि रहत होइ बडे भागि लिव लागी ॥
कहि रविदास उदास दास मति जनम मरन भै भागी ॥ ३ ॥ २ ॥ १५ ॥

सार: संतुलित मन की शक्ति बिना विकृति और जल्दबाज़ी के उसकी स्पष्ट देखने की क्षमता में निहित होती है। जब भीतरी उथल-पुथल कम होती है तभी हमारा ध्यान तेज़, स्थिर और प्रतिक्रियाशील बनता है। हम चिंता, रक्षात्मकता और अत्यधिक सोच में ऊर्जा व्यर्थ करना छोड़ देते हैं। यह स्पष्टता उन क्षमताओं को सहज प्रवाह देती है जो पहले बाधित लगती थीं। संसाधन और क्षमताएं, चाहे वह बौद्धिक, आध्यात्मिक, भौतिक या हालात से जुड़ी हों, सुलभ और प्राप्त करने योग्य प्रतीत होने लगती हैं। शांति और संतुलन की अवस्था उन अवरोधों को हटा देती है जो हमारे पास पहले से मौजूद समृद्धि को ढक देते हैं तब हम अपनी वास्तविक संपदा को पहचान, उनकी सराहना कर पाते हैं।

सुख सागर सुरितरु चिंतामनि कामधेन बसि जा के रे ॥
शांति का सागर, चमत्कारों का पेड़ (कल्पवृक्ष), इच्छा पूरी करने वाला रत्न (चिंतामणि) और इच्छा पूरी करने वाली गाय (कामधेनु), यह सभी सर्वव्यापी चेतना के अधीन हैं। यह पौराणिक संदर्भ बताते हैं कि पोषक समृद्धि हमारे भीतर, स्वभावतः पहले से सहज गुणों के रूप में विद्यमान है।

चारि पदारथ असट महा सिधि नव निधि कर तल ता कै ॥१॥

चार तत्व, अठारह अलौकिक शक्तियाँ और नौ खज़ाने सभी सर्वव्यापी चेतना की पहुँच में हैं। यह उपलब्धियाँ एक संतुलित मन की शक्ति को दर्शाती हैं परिणामस्वरूप, यह सभी क्षमताएँ और संसाधन सुलभ लगते हैं। (१)

हरि हरि हरि न जपसि रसना ॥

अंतरात्मा सर्वव्यापी चेतना के एकत्व पर निरंतर विचार नहीं करती है। यह प्रकृति से विच्छेदन की मानवीय प्रवृत्ति को उजागर करता है, इसके बावजूद कि हम स्वाभाविक परस्पर जुड़ाव को पहचानते हैं।

अवर सभ छाडि बचन रचना ॥१॥ रहाउ ॥

अन्य सभी उपदेशों और धारणाओं को त्याग दें। यह हमारे मन को शांत करने, अपने सच्चे स्वरूप और दूसरों के साथ सामंजस्य बिठाने का स्मरण कराता है। (१)(विराम)

नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर माही ॥

अलग-अलग महाकाव्य, पवित्र ग्रंथ और ज्ञान के ग्रंथ वर्णमाला के चौतीस अक्षरों से बुने हुए हैं। यह शब्दों को सच्चाई खोजने के साधन के रूप में दिखाता है, न कि मनमाने प्रतीकों के रूप में।

बिआस बीचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥२॥

व्यास ने गहरे चिंतन के बाद परम सत्य बताया कि सर्वव्यापी वास्तविकता के बराबर कुछ भी नहीं है। यह बताता है कि विद्वान भी शास्त्रीय ज्ञान को अनुभवात्मक ज्ञान से कम मानते हैं। (२)

सहज समाधि उपाधि रहत होइ बडे भागि लिव लागी ॥

आत्म-कृपा के सौभाग्य से, मनुष्य स्वाभाविक शांति में प्रवेश करता है जो जटिलताओं और द्वैत से मुक्त होती है। यह आत्म-चिंतन को सहज ध्यान की एक अवस्था के रूप में बताता है जिसमें मन का संघर्ष समाप्त हो जाता है।

कहि रविदास उदास दास मति जनम मरन भै भागी ॥३॥२॥१५॥

रविदास कहते हैं कि मन में इस वैराग्य और ज्ञान को धारण करने से जन्म और मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है। यह रेखांकित करता है कि प्रकाश की भीतरी अनुभूति, अस्तित्व संबंधी नश्वरता की चिंता का इलाज है। (३)(२)(१५)

तत्त्व: भगत रविदास साधकों से सच्ची संतुष्टि के लिए भीतर देखने का आग्रह करते हैं और हमें याद दिलाते हैं कि यह बाहरी चीज़ों की खोज में नहीं बल्कि अंदरूनी अनुभूति से मिलती है। वह विशेष शक्तियों के पीछे भागने या धर्मग्रंथों की व्याख्या की उलझनों में खोने की व्यर्थता पर ज़ोर देते हैं। इसके बजाय, वह बताते हैं कि सभी पौराणिक खज़ाने और मानसिक क्षमताएं स्वयं स्रोत के अंदर ही हैं और हम सभी उस गहरे स्रोत के विस्तार के रूप में एक-दूसरे से जुड़े हैं। समस्त ब्रह्मांड के साथ अपनी एकता को अपनाकर, हम अपनी अंतर्निहित क्षमता तक पहुँच सकते हैं।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com